

So, Value this Time

06-02-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - अभी यह चढ़ती कला का समय है,
भारत गरीब से साहूकार बनता है, तुम बाप से
सतयुगी बादशाही का वर्सा ले लो"



प्रश्न:- बाप का कौन सा टाइटिल श्रीकृष्ण को नहीं दे सकते हैं?



उत्तर:- बाप है गरीब-निवाज। श्रीकृष्ण को ऐसे नहीं कहेंगे। वह तो बहुत धनवान है, उनके राज्य में सब साहूकार हैं। बाप जब आते हैं तो सबसे गरीब भारत है। भारत को ही साहूकार बनाते हैं। तुम कहते हो हमारा भारत स्वर्ग था, अभी नहीं है, फिर से बनने वाला है। गरीब-निवाज़ बाबा ही भारत को स्वर्ग बनाते हैं।

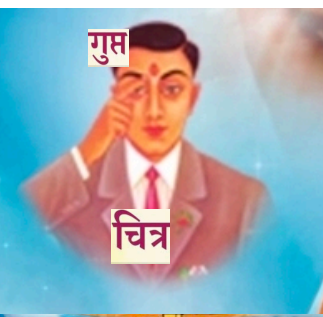
Exclusive Authority of Shiv baba

गीत:-आखिर वह दिन आया आज.....

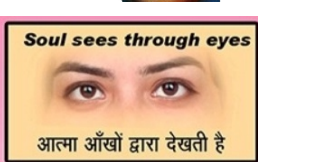
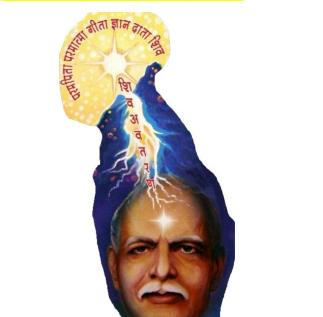
Click

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों ने यह गीत

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.



अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः ।
परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम् ॥
बुद्धिहीन पुरुष मेरे अनुत्तम अविनाशी परम
भावको न जानते हुए मन-इन्द्रियोंसे परे मुझ
सच्चिदानन्दधन परमात्माको मनुष्यकी भाँति जन्मकर
व्यक्तिभावको प्राप्त हुआ मानते हैं ॥ २४ ॥
नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः ।
मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम् ॥
अपनी योगमायासे छिपा हुआ मैं सबके प्रत्यक्ष
नहीं होता, इसलिए यह अज्ञानी जनसमुदाय मुझ
जन्मरहित अविनाशी परमेश्वरको नहीं जानता अर्थात्
मुझको जन्मने-मरनेवाला समझता है ॥ २५ ॥



06-02-2026



ली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

सुना। जैसे आत्मा गुप्त है और शरीर प्रत्यक्ष है।

आत्मा इन आंखों से देखने में नहीं आती है,

इनकागनीटो है। है जरूर परन्तु इस शरीर से ढकी

हुई है इसलिए कहा जाता है आत्मा गुप्त है।

आत्मा खुद कहती है मैं निराकार हूँ, यहाँ साकार

में आकर गुप्त बनी हूँ। आत्माओं की निराकारी

दुनिया है। उसमें तो गुप्त की बात नहीं। परमपिता

परमात्मा भी वहाँ रहते हैं। उनको कहा जाता है

सुप्रीम। ऊंच ते ऊंच आत्मा, परे ते परे रहने वाला

परम आत्मा। बाप कहते हैं जैसे तुम गुप्त हो, मुझे

भी गुप्त आना पड़े। मैं गर्भजेल में आता नहीं हूँ।

मेरा नाम एक ही शिव चला आता है। मैं इस तन में

आता हूँ तो भी मेरा नाम नहीं बदलता। इनकी

आत्मा का जो शरीर है, इनका नाम बदलता है।

मुझे तो शिव ही कहते हैं - सब आत्माओं का बाप।

तो तुम आत्मायें इस शरीर में गुप्त हो, इस शरीर

द्वारा कर्म करती हो। मैं भी गुप्त हूँ। तो बच्चों को

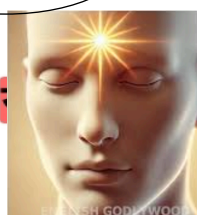
यह ज्ञान अभी मिल रहा है कि आत्मा इस शरीर से

ढकी हुई है। आत्मा है इनकागनीटो। शरीर है

कागनीटो। मैं भी हूँ अशरीरी। बाप इनकागनीटो

Points:

ज्ञान

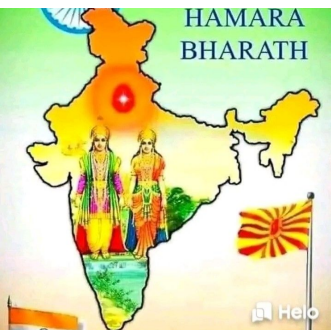
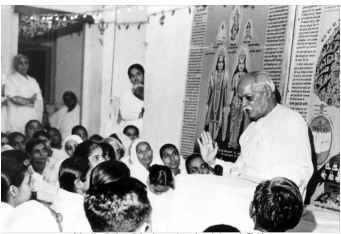


ारणा

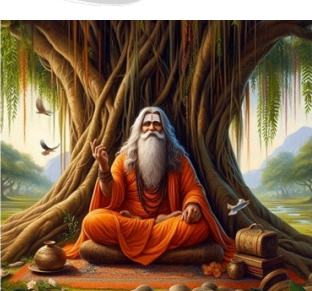
सेवा

M.imp.

06-02-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



Subtle Psychology



इस शरीर द्वारा सुनाते हैं। तुम भी इनकागनीटो हो, शरीर द्वारा सुनते हो। तुम जानते हो बाबा आया हुआ है - भारत को फिर से गरीब से साहूकार बनाने। तुम कहेंगे हमारा भारत। हर एक अपने स्टेट के लिए कहेंगे - हमारा गुजरात, हमारा राजस्थान। हमारा-हमारा कहने से उसमें मोह

रहता है। हमारा भारत गरीब है। यह सभी मानते हैं परन्तु उन्हें यह पता नहीं कि हमारा भारत साहूकार कब था, कैसे था। तुम बच्चों को बहुत नशा है। हमारा भारत तो बहुत साहूकार था, दुःख की बात नहीं थी। सतयुग में दूसरा कोई धर्म नहीं था। एक ही देवी-देवता धर्म था, यह किसको पता नहीं है। यह जो वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी है यह कोई नहीं जानते। अभी तुम अच्छी रीति समझते हो, हमारा भारत बहुत साहूकार था। अभी बहुत गरीब है। अब फिर बाप आये हैं साहूकार बनाने। भारत सतयुग में बहुत साहूकार था जबकि देवी-देवताओं का राज्य था फिर वह राज्य कहाँ चला गया। यह कोई नहीं जानते। ऋषि-मुनि आदि भी कहते थे हम रचता और रचना को नहीं जानते हैं।

Points:

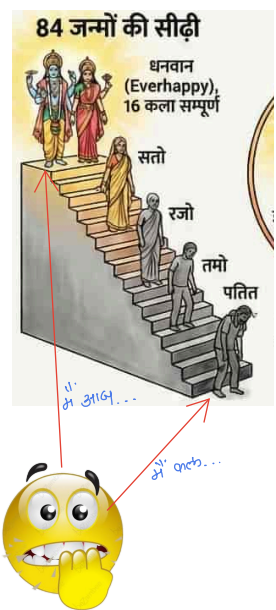
नेती - नेती

Neti Neti, Not this, Not this,
You are not this body,
You are not this mind.
Tat Twam Asi, Thou Art That,
You are the Soul, the Spirit Divine.

सेवा

M.imp.

06-02-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



बाप कहते हैं सतयुग में भी देवी-देवताओं को रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान नहीं था। अगर उन्होंने को भी ज्ञान हो कि हम सीढ़ी उतरते कलियुग में चले जायेंगे तो बादशाही का सुख भी न रहे, चिंता लग जाए। अभी तुमको चिंता लगी हुई है हम सतोप्रधान थे फिर हम सतोप्रधान कैसे बनें! हम आत्मायें जो निराकारी दुनिया में रहती थी, वहाँ से फिर कैसे सुखधाम में आये यह भी ज्ञान है। हम अभी चढ़ती कला में हैं। यह 84 जन्मों की सीढ़ी है। ड्रामा अनुसार हर एक एक्टर नम्बरवार अपने-अपने समय पर आकर पार्ट बजायेंगे। अब तुम बच्चे जानते हो गरीब-निवाज़ किसको कहा जाता है, यह दुनिया नहीं जानती। गीत में भी सुना - आखिर वह दिन आया आज, जिस दिन का रास्ता तकते थे....., सब भक्त। भगवान कब आकर हम भक्तों को इस भक्ति मार्ग से छुड़ाए सद्गति में ले जायेंगे - यह अभी समझा है। बाबा फिर से आ गया है इस शरीर में। शिव जयन्ती भी मनाते हैं तो जरूर आते हैं। ऐसे भी नहीं कहेंगे मैं श्रीकृष्ण के तन में आता हूँ। नहीं।



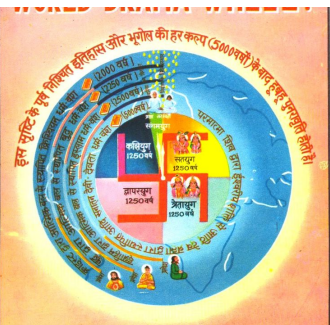
How lucky and Great we are...!

आखिर वो दिन आया आज
आखिर वो दिन आया आज
जिस दिन का रस्ता ताकता था
जिसका था मोहताज आखिर
जिस दिन का रस्ता ताकता था
जिसका था मोहताज
आखिर वो दिन आया आज
आखिर वो दिन आया आज



Simple Logic

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.



06-02-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

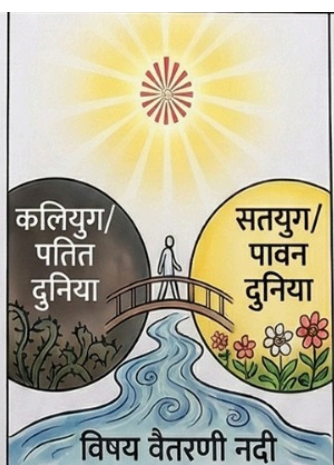
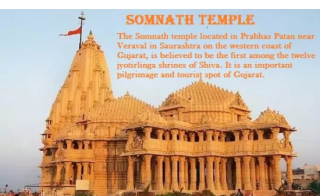
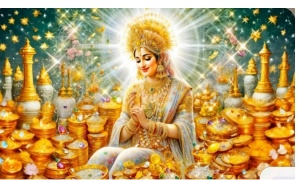
बाप कहते हैं श्रीकृष्ण की आत्मा ने 84 जन्म लिए हैं। उनके बहुत जन्मों के अन्त का यह अन्तिम जन्म है। जो पहले नम्बर में था वह अब अन्त में है तत-त्वम्। मैं तो आता हूँ साधारण तन में। तुमको आकर बतलाता हूँ - तुमने कैसे 84 जन्म भोगे हैं। सरदार लोग भी समझते हैं एकोअंकार परमपिता परमात्मा बाप है। वह बरोबर मनुष्य से देवता बनाने वाला है। तो क्यों नहीं हम भी देवता बनें। जो देवता बने होंगे वह एकदम चटक पड़ेंगे। देवी-देवता धर्म का तो एक भी अपने को समझते नहीं। और धर्मों की हिस्ट्री बहुत छोटी है। कोई की 500 वर्ष की, कोई की 1250 वर्ष की। तुम्हारी हिस्ट्री है 5 हजार वर्ष की। देवता धर्म वाले ही स्वर्ग में आयेंगे। और धर्म तो आते ही बाद में हैं। देवता धर्म वाले भी अब और धर्मों में कनवर्ट हो गये हैं ड्रामा अनुसार। फिर भी ऐसे कनवर्ट हो जायेंगे। फिर अपने-अपने धर्म में लौटकर आयेंगे।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

06-02-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

बाप समझाते हैं - बच्चे, तुम तो विश्व के मालिक थे। तुम भी समझते हो बाबा स्वर्ग की स्थापना करने वाला है तो हम क्यों नहीं स्वर्ग में होंगे, बाप से हम वर्सा जरूर लेंगे - तो इससे सिद्ध होता है

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः॥
अच्छी प्रकार आचरणमें लाये हुए दूसरेके धर्मसे गुणरहित भी अपना धर्म अति उत्तम है। अपने धर्ममें तो मरना भी कल्याणकारक है और दूसरेका धर्म भयको देनेवाला है॥ ३५॥ अध्याय - 3



यह हमारे धर्म का है। जो नहीं होगा वह आयेगा ही नहीं। कहेंगे पराये धर्म में क्यों जायें। तुम बच्चे जानते हो सतयुग नई दुनिया में देवताओं को बहुत सुख थे, सोने के महल थे। सोमनाथ के मन्दिर में कितना सोना था। ऐसा कोई दूसरा धर्म होता ही नहीं। सोमनाथ मन्दिर जैसा इतना भारी मन्दिर कोई होगा नहीं। बहुत हीरे-जवाहरात थे। बुद्ध आदि के कोई हीरे-जवाहरातों के महल थोड़े ही होंगे। तुम बच्चों को जिस बाप ने इतना ऊंच बनाया है उनकी तुमने कितनी इज्जत रखी है! इज्जत रखी जाती है ना। समझते हैं अच्छा कर्म करके गये हैं। अभी तुम जानते हो सबसे अच्छे कर्म पतित-पावन बाप ही करके जाते हैं। तुम्हारी आत्मा कहती है सबसे उत्तम से उत्तम सेवा बेहद का बाप आकर करते हैं। हमको रंक से राव, बेगर से प्रिन्स बना देते हैं। जो भारत को स्वर्ग बनाते हैं,

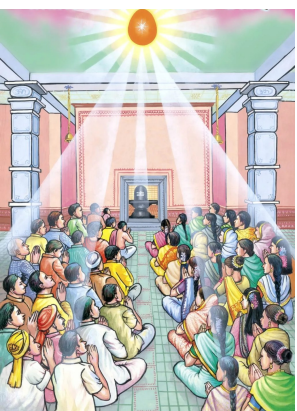
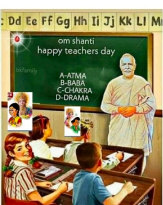
Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.



THEY CAME, THEY SAW, THEY DESTROYED, BUT DHARMA RISES AGAIN AND AGAIN !



SOMNATH TEMPLE : LOOTED, DESTROYED AND RESURRECTED 17 TIMES.



06-02-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

उनकी अभी इज्जत कोई नहीं रखते। तुम जानते हो ऊंच ते ऊंच मन्दिर गाया हुआ है जिसको लूट गये। लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर को कभी कोई ने लूटा नहीं है। सोमनाथ के मन्दिर को लूटा है। भक्ति मार्ग में भी बहुत धनवान होते हैं। राजाओं में भी नम्बरवार होते हैं ना। जो ऊंच मर्तबे वाले होते हैं तो छोटे मर्तबे वाले उन्हीं की इज्जत रखते हैं। दरबार में भी नम्बरवार बैठते हैं। बाबा तो अनुभवी है ना। यहाँ की दरबार है पतित राजाओं की। पावन राजाओं की दरबार कैसी होगी। जबकि उन्हीं के पास इतना धन है तो उन्हीं के घर भी इतने अच्छे होंगे। अभी तुम जानते हो बाप हमको पढ़ा रहे हैं, स्वर्ग की स्थापना करा रहे हैं। हम महारानी-महाराजा स्वर्ग के बनते हैं फिर हम गिरते-गिरते भक्त बनेंगे तो पहले-पहले शिवबाबा के पुजारी बनेंगे। जिसने स्वर्ग का मालिक बनाया उनकी ही पूजा करेंगे। वह हमको बहुत साहूकार बनाते हैं। अभी भारत कितना गरीब है, जो जमीन 500 रुपये में ली थी उसकी वैल्यू आज 5 हजार से भी अधिक हो गई है। यह सब हैं आर्टीफीशियल

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Heaven/सतयुग



बाप को गरीब निवाज़ क्यों कहा गया है?
क्योंकि बाप गरीब अर्थात् दुःखी
दुनिया को दुःख से छुड़ाते हैं



दाम। वहाँ तो धरती का मूल्य होता नहीं, जिसको जितना चाहिए ले लेवे। ढेर की ढेर जमीन पड़ी होगी। मीठी नदियों पर तुम्हारे महल होंगे। मनुष्य बहुत थोड़े होंगे। प्रकृति दासी होगी। फल-फूल बहुत अच्छे मिलते रहते हैं। अभी तो कितनी मेहनत करनी पड़ती है तो भी अन्न नहीं मिलता। मनुष्य बहुत भूख प्यास में मरते हैं। तो गीत सुनने से तुम्हारे रोमांच खड़े हो जाने चाहिए। बाप को गरीब-निवाज़ कहते हैं। गरीब-निवाज़ का अर्थ समझा ना! किसको साहूकार बनाते हैं? जरूर जहाँ आयेगा उनको साहूकार बनायेगा ना। तुम बच्चे जानते हो - हमको पावन से पतित बनने में 5 हज़ार वर्ष लगते हैं। अभी फिर फट से बाबा पतित से पावन बनाते हैं। ऊंच ते ऊंच बनाते हैं, एक सेकेण्ड में जीवनमुक्ति मिल जाती है। कहते हैं बाबा हम आपका हूँ। बाप कहते बच्चे, तुम विश्व का मालिक हो। बच्चा पैदा हुआ और वारिस बना। कितनी खुशी होती है। बच्ची को देख चेहरा उतर जाता। यहाँ तो सभी आत्मायें बच्चे हैं। अभी पता पड़ा है कि हम 5 हज़ार वर्ष पहले स्वर्ग के मालिक



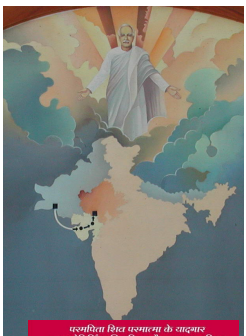
थे। बाबा ने ऐसा बनाया था। शिवजयन्ती भी मनाते हैं परन्तु यह नहीं जानते कि वह कब आया था। लक्ष्मी-नारायण का राज्य था, यह भी कोई नहीं जानते। जयन्ती मनाते सिर्फ लिंग के बड़े-बड़े मन्दिर बनाते हैं। परन्तु वह कैसे आया, क्या आकर किया, कुछ भी नहीं जानते, इसको कहा जाता है ब्लाईन्ड फेथ, अन्धश्रद्धा। उनको यह पता

ही नहीं है कि हमारा धर्म कौन सा है, कब स्थापन हुआ। और धर्म वालों को पता है, बुद्ध कब आया, तिथि तारीख भी है। शिवबाबा की, लक्ष्मी-नारायण की कोई तिथि तारीख नहीं है। 5 हज़ार वर्ष की बात को लाखों वर्ष लिख दिया है। लाखों वर्ष की बात किसको याद आ सकेगी? भारत में देवी-

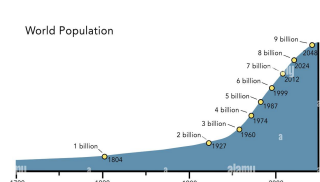
देवता धर्म कब था, यह समझते नहीं हैं। लाखों वर्ष के हिसाब से तो भारत की आबादी सबसे बड़ी होनी चाहिए। भारत की जमीन भी सबसे बड़ी होनी चाहिए। लाखों वर्ष में कितने मनुष्य पैदा होते, बेशुमार मनुष्य हो जायें। इतने तो हैं नहीं, और ही

कमती हो गये हैं, यह सब बातें बाप बैठ समझाते हैं। मनुष्य सुनते हैं तो कहते हैं यह बातें तो कभी

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.



पुछो अपने आप से...



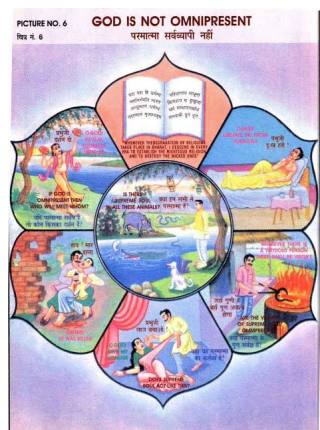
| 8 अरब की आबादी तक का सफर | | |
|----------------------------------|--------------|-----------------------------------|
| आबादी | साल | कितने वर्ष लगे |
| 1 अरब | 1804 | पहली बार दुनिया में 1 अरब लोग हुए |
| 2 अरब | 1927 | 123 साल लगे |
| 3 अरब | 1960 | 33 साल |
| 4 अरब | 1974 | 14 साल |
| 5 अरब | 1987 | 13 साल |
| 6 अरब | 1999 | 12 साल |
| 7 अरब | 2011 | 12 साल |
| 7 से 7.9 अरब | 2011 से 2022 | 11 साल |
| 15 नवंबर 2022 को हमने आठ अरब लोग | | |



नहीं सुनी, न कोई शास्त्र में पढ़ी। यह वन्दरफुल
बातें हैं।



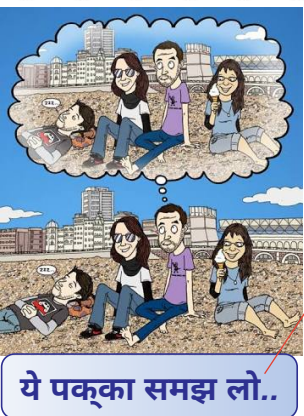
अभी तुम बच्चों की बुद्धि में सारे चक्र की नॉलेज है। यह बहुत जन्मों के अन्त के अन्त में अब पतित आत्मा है, जो सतोप्रधान था सो अब तमोप्रधान है फिर सतोप्रधान बनना है। तुम आत्माओं को अब शिक्षा मिल रही है। आत्मा कानों द्वारा सुनती है तो शरीर झूलता है क्योंकि आत्मा सुनती है ना। बरोबर हम आत्मायें 84 जन्म लेती हैं। 84 जन्म में 84 माँ-बाप जरूर मिले होंगे। यह भी हिसाब है ना। बुद्धि में आता है हम 84 जन्म लेते हैं फिर कम जन्म वाले भी होंगे। ऐसे थोड़ेही सब 84 जन्म लेंगे। बाप बैठ समझाते हैं शास्त्रों में क्या-क्या लिख दिया है। तुम्हारे लिए तो फिर भी 84 जन्म कहते, मेरे लिए तो अनगिनत, बेशुमार जन्म कह देते हैं। कण-कण में पत्थर-भित्तर में ठोक दिया है। बस जिधर देखता हूँ तू ही तू। कृष्ण ही



06-02-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

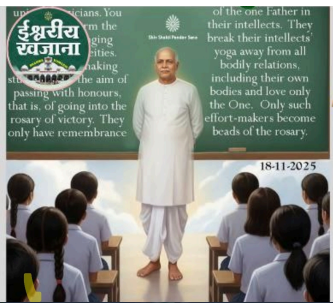


कृष्ण है। मथुरा, वृन्दावन में ऐसे कहते रहते हैं।
कृष्ण ही सर्वव्यापी है। राधे पंथी वाले फिर कहेंगे
राधे ही राधे। तुम भी राधे, हम भी राधे।



तो एक बाप ही बरोबर गरीब-निवाज़ है। भारत जो
सबसे साहूकार था, अभी सबसे गरीब बना है
इसलिए मुझे भारत में ही आना पड़े। यह बना-
बनाया ड्रामा है, इसमें जरा भी फ़र्क नहीं हो
सकता। ड्रामा जो शूट हुआ वह हूबहू रिपीट होगा,
इसमें पाई का भी फ़र्क नहीं हो सकता। ड्रामा का
भी पता होना चाहिए। ड्रामा माना ड्रामा। वह होते
हैं हद के ड्रामा, यह है बेहद का ड्रामा। इस बेहद के
ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को कोई नहीं जानते।
तो गरीब-निवाज़ निराकार भगवान को ही मानेंगे,
श्रीकृष्ण को नहीं मानेंगे। श्रीकृष्ण तो धनवान
सतयुग का प्रिन्स बनते हैं। भगवान को तो अपना
शरीर है नहीं। वह आकर तुम बच्चों को धनवान
बनाते हैं, तुमको राजयोग की शिक्षा देते हैं। पढ़ाई

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.



Attention! Top secret Revealed

point to be noted



Refer pg-36
for more
details



How Great we are...!

06-02-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

से बैरिस्टर आदि बनकर फिर कमाई करते हैं। बाप

भी तुमको अभी पढ़ाते हैं। तुम भविष्य में नर से

नारायण बनते हो। तुम्हारा जन्म तो होगा ना। ऐसे

तो नहीं स्वर्ग कोई समुद्र से निकल आयेगा।

श्रीकृष्ण ने भी जन्म लिया ना। कंसपुरी आदि तो

उस समय थी नहीं। श्रीकृष्ण का कितना नाम

गाया जाता है। उनके बाप का गायन ही नहीं।

उनका बाप कहाँ है? जरूर श्रीकृष्ण किसी का

बच्चा होगा ना।⁶⁶ श्रीकृष्ण जब जन्म लेते हैं तब

थोड़े बहुत पतित भी रहते हैं। जब वह बिल्कुल

खत्म हो जाते हैं तब वह गद्दी पर बैठते हैं। अपना

राज्य ले लेते हैं, तब से ही उनका संवत शुरू होता

है। लक्ष्मी-नारायण से ही संवत शुरू होता है।⁹⁹ तुम

पूरा हिसाब लिखते हो। इनका राज्य इतना समय,

फिर इनका इतना समय, तो मनुष्य समझेंगे - यह

कल्प की आयु बड़ी हो नहीं सकती। 5 हजार वर्ष

का पूरा हिसाब है। तुम बच्चों की बुद्धि में आता है

ना। हम कल स्वर्ग के मालिक थे। बाप ने बनाया

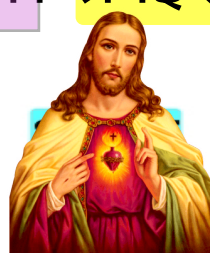
था तब तो उनकी हम शिव जयन्ती मना रहे हैं।

तुम सबको जानते हो। क्राइस्ट, गुरूनानक आदि

Points:

ज्ञान

योग



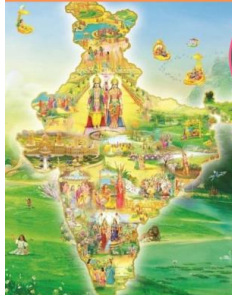
सेव



imp.



फिर कब आयेंगे, यह तुमको नॉलेज है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी हूबहू रिपीट होती है। यह पढ़ाई कितनी सहज है। तुम स्वर्ग को जानते हो, बरोबर भारत स्वर्ग था। भारत अविनाशी खण्ड है। भारत जैसी महिमा और कोई की हो नहीं सकती। सबको पतित से पावन बनाने वाला एक ही बाप है। अच्छा।



मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।



धारणा के लिए मुख्य सार:-



1) ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान बुद्धि में रखते हुए सब चिंतायें छोड़ देनी हैं। एक सतोप्रधान बनने की चिंता रखनी है।



2) गरीब निवाज़ बाबा भारत को गरीब से साहूकार बनाने आया है, उनका पूरा-पूरा मददगार बनना है। अपनी नई दुनिया को याद कर सदा खुशी में रहना है।



Points: ज्ञान य

नेवा

M.imp.

06-02-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



वरदान:- दिल में सदा एक राम को बसाकर सच्ची सेवा करने वाले मायाजीत, विजयी भव



हो बाबा, हाजीर बाबा, अभी बाबा...

हनूमान की विशेषता दिखाते हैं कि वह सदा सेवाधारी, महावीर था, इसलिए खुद नहीं जला लेकिन पूंछ द्वारा लंका जला दी।

समझा?

Note it down

तो यहाँ भी जो सदा सेवाधारी हैं वही माया के अधिकार को खत्म कर सकते हैं।



जो सेवाधारी नहीं वह माया के राज्य को जला नहीं सकते।

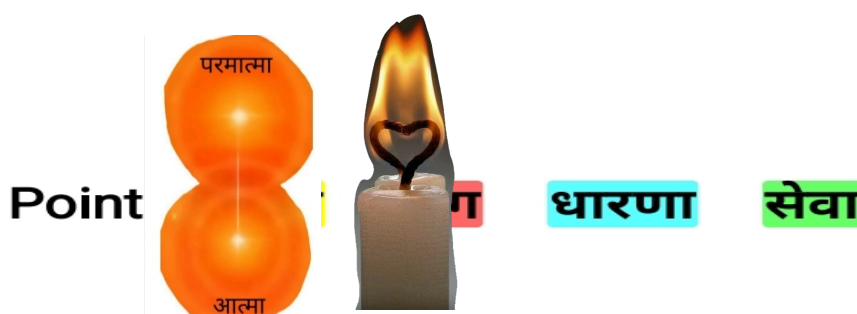
ये (पक्का) समझ लो..

हनूमान के दिल में सदा एक राम बसता था, तो बाप के सिवाए और कोई दिल में न हो, अपने देह की स्मृति भी न हो तब मायाजीत, विजयी बनेंगे।

Mind very well...



स्लोगन:- जैसे आत्मा और शरीर कम्बाइण्ड है ऐसे आप बाप के साथ कम्बाइण्ड रहो।



ये अव्यक्त इशारे -

एकता और विश्वास की विशेषता द्वारा

सफलता सम्पन्न बनी



संगठन में ¹ हर एक की विशेषता को देखना, ² विशेषता ही ग्रहण करना और ³ कमजोरियों को मिटाने का प्रयत्न करना - यही विधि है, एकता का संगठन मजबूत करने की।



जैसे आप सबका उठना, बोलना, चलना एक जैसा है या सबकी एक जैसी बातें, एक ही गति, एक ही रीति, एक ही नीति है, ऐसे ही संस्कार भी समान दिखाई दें।



भिन्नता होते भी एक दो में विश्वास रख सबके विचारों को सत्कार दो, यही एकता का आधार है।

बिल्कुल अच्छा धारणा वाला हागा वह अच्छा रात समझा सकेंगे। ब्रह्मा पर ही जास्ती बात समझाने की होती है। विष्णु को भी नहीं जानते। यह भी समझाना होता है। वैकुण्ठ को विष्णुपुरी कहा जाता है अर्थात् लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। श्रीकृष्ण प्रिन्स होगा तो कहेंगे ना - हमारा बाबा राजा है। ऐसे नहीं कि श्रीकृष्ण का बाप राजा नहीं हो सकता। श्रीकृष्ण प्रिन्स कहलाया जाता है तो जरूर राजा के पास जन्म हुआ है। साहूकार पास जन्म ले तो प्रिन्स थोड़ेही कहलायेंगे। राजा के पद और साहूकार के पद में रात-दिन का फ़र्क हो जाता है। श्रीकृष्ण के बाप राजा का नाम ही नहीं है। श्रीकृष्ण का कितना नाम बाला है। बाप का ऊंच पद नहीं कहेंगे। वह सेकण्ड क्लास का पद है जो सिर्फ निमित्त बनते हैं श्रीकृष्ण को जन्म देने। ऐसे नहीं कि श्रीकृष्ण की आत्मा से वह ऊंच पढ़ा हुआ है। नहीं। श्रीकृष्ण ही सो फिर नारायण बनते हैं। बाकी बाप का नाम ही गुम हो जाता है। है

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp. 6

13-08-2025 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

जरूर ब्राह्मण। परन्तु पढ़ाई में श्रीकृष्ण से कम है। श्रीकृष्ण की आत्मा की पढ़ाई अपने बाप से ऊंच थी, तब तो इतना नाम होता है। श्रीकृष्ण का बाप कौन था - यह जैसे किसको पता नहीं। आगे चल मालूम पड़ेगा। बनना तो यहाँ से ही है। राधे के भी माँ-बाप तो होंगे ना। परन्तु उनसे राधे का नाम जास्ती है क्योंकि माँ-बाप कम पढ़े हुए हैं। राधे का नाम उनसे ऊंच हो जाता है। यह हैं डीटेल की बातें - बच्चों को समझाने के लिए। सारा मदार पढ़ाई पर है। ब्रह्मा पर भी समझाने का अक्ल चाहिए। वही श्रीकृष्ण जो है उनकी आत्मा ही 84 जन्म भोगती है। तुम भी 84 जन्म लेते हो। सब इकट्ठे तो नहीं आयेंगे। जो पढ़ाई में पहले-पहले होते हैं वहाँ



25-10-2025 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

संस्कार ले जाती है। अभी तुम गुल-गुल (फूल) बन अच्छे घर में जन्म लेते रहेंगे। यहाँ जो अच्छा पुरुषार्थ करते हैं, तो जरूर अच्छे कुल में जन्म लेते होंगे। नम्बरवार तो हैं ना। जैसे-जैसे कर्म करते हैं ऐसा जन्म लेते हैं। जब बुरे कर्म करने वाले बिल्कुल खत्म हो जाते हैं फिर स्वर्ग स्थापन हो जाता है, छांटछूट होकर। तमोप्रधान जो भी हैं वह खत्म हो जाते हैं। फिर नये देवताओं का आना शुरू होता है। जब भ्रष्टाचारी सब खत्म हो जाते हैं तब श्रीकृष्ण का जन्म होता है, तब तक बदली सदली होती रहती है। जब कोई छी-छी नहीं रहेगा तब श्रीकृष्ण आयेगा, तब तक तुम आते जाते रहेंगे। श्रीकृष्ण को रिसीव करने वाले माँ बाप भी पहले से चाहिए ना। फिर सब अच्छे-अच्छे रहेंगे। बाकी चले जायेंगे, तब ही उसको स्वर्ग कहा जायेगा। तुम श्रीकृष्ण को रिसीव करने वाले रहेंगे। भल तुम्हारा छी-छी जन्म होगा क्योंकि रावण राज्य है ना। शुद्ध जन्म तो हो न सके। गुल-गुल (पवित्र) जन्म श्रीकृष्ण का ही पहले-पहले होता है। उसके बाद नई दुनिया वैकुण्ठ कहा जाता है।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp. 8



25-10-2025 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

श्रीकृष्ण बिल्कुल गुल-गुल नई दुनिया में आयेंगे। रावण सम्प्रदाय बिल्कुल खत्म हो जायेगी। श्रीकृष्ण का नाम उनके माँ-बाप से भी बहुत बाला है। श्रीकृष्ण के माँ-बाप का नाम इतना बाला नहीं है। श्रीकृष्ण से पहले जिनका जन्म होता है वो योगबल से जन्म नहीं कहेंगे। ऐसे नहीं श्रीकृष्ण के माँ-बाप ने योगबल से जन्म लिया है। नहीं, अगर ऐसा होता तो उन्हीं का भी नाम बाला होता। तो सिद्ध होता है उनके माँ-बाप ने इतना पुरुषार्थ नहीं किया है जितना श्रीकृष्ण ने किया है। यह सब बातें आगे चल तुम समझते जायेंगे। पूरी कर्मातीत अवस्था वाले राधे-कृष्ण ही हैं। वही सद्गति में आते हैं। पाप आत्मायें सब खत्म हो जाती हैं तब उन्हीं का जन्म होता है फिर कहेंगे पावन दुनिया इसलिए श्रीकृष्ण का नाम बाला है। माँ-बाप का इतना नहीं। आगे चल तुमको बहुत साक्षात्कार होंगे। टाइम तो पड़ा है। तुम किसको भी समझा सकते हो - हम यह बनने के लिए पढ़ रहे हैं। विश्व में इनका राज्य अब स्थापन हो रहा है। हमारे लिए तो नई दुनिया चाहिए। अभी तुमको दैवी सम्प्रदाय

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp. 9



सर्वशक्तिमान ईश्वर को सिर्फ और सिर्फ प्रेम से ही हम अपना बना सकते हैं।



वरदान:- स्नेह की शक्ति से माया की शक्ति को समाप्त करने वाले सम्पूर्ण ज्ञानी भव

स्नेह में समाना ही सम्पूर्ण ज्ञान है। स्नेह ब्राह्मण जन्म का वरदान है।

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा

12

11-12-2024 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

संगमयुग पर स्नेह का सागर स्नेह के हिरे मोतियों की थालियां भरकर दे रहे हैं, तो स्नेह में सम्पन्न बनो।

स्नेह की शक्ति से परिस्थिति रूपी पहाड़ परिवर्तन हो पानी समान हल्का बन जायेगा। माया का कैसा भी विकराल रूप वा रॉयल रूप सामना करे तो सेकण्ड में स्नेह के सागर में समा जाओ। तो स्नेह की शक्ति से माया की शक्ति समाप्त हो जायेगी।

सुनाया था, मेहनत से मुक्त होने का सहज साधन है - दिल से बाप के अति स्नेही बन जाना। आप

उस सर्वशक्तिमान को हम अपने सच्चे प्रेम से ही प्राप्त कर सकते हैं नहीं तो चाहे कितना ही ज्ञान पढ़ ले लेकिन हम उस सर्वशक्तिमान को नहीं पा सकते। प्रभु की प्राप्ति का मूल मंत्र है उस सच्चे माशूक के प्रेम में डूब जाना।

Example

कार्तिकेय और गणेश दोनों ही शिव और पार्वती/ब्रह्मा माँ के बच्चे हैं लेकिन कार्तिकेय ज्ञान के आधार पर चलता है और गणेश ज्ञान और दिल के सच्चे प्रेम के आधार पर चलता है इसलिए शास्त्रों में बताया है कि जब सारी सृष्टि का सात बार चक्कर लगाने की बात आई तो कार्तिकेय चक्कर ही लगाता रहा और गणेश ने अपने माता-पिता अर्थात शिव बाबा और ब्रह्मा माँ को ही अपनी सृष्टि मानकर उनके सात फेरे लगा लिए और कुछ ही पल में वह विजय हो गया।



Point to be Noted

short cut

m-m-m....Imp

point to be noted for life time



या किनारा कर लेते हैं? क्योंकि बापदादा ने देखा कि जो दिल के स्नेही हैं, बाप के दिल के स्नेही, सर्व के स्नेही अवश्य होंगे। दिल का स्नेह बहुत सहज विधि है सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने की। चाहे कोई कितना भी ज्ञानी हो, लेकिन अगर दिल का स्नेह नहीं है तो ब्राह्मण जीवन में रमणीक जीवन नहीं होगी। रूखी जीवन होगी क्योंकि ज्ञान में, स्नेह बिना अगर ज्ञान है तो ज्ञान में प्रश्न उठते हैं क्यों, क्या! लेकिन स्नेह ज्ञान सहित है तो स्नेही सदा स्नेह में लवलीन रहते हैं। स्नेही को याद करने की मेहनत करनी नहीं पड़ती। सिर्फ ज्ञानी है, स्नेह नहीं है तो मेहनत करनी पड़ती है। वह मेहनत का फल खाता, वह मुहब्बत का फल खाता। ज्ञान है बीज लेकिन पानी है स्नेह। अगर बीज को स्नेह का पानी नहीं मिलता तो फल नहीं निकलता है। ये पकका समझ लो



ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp. 4

08-06-25 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" रिवाइज: 15-11-05 मधुबन



तो आज बापदादा सर्व बच्चों के दिल का स्नेह चेक कर रहे थे। चाहे बाप से, चाहे सर्व से। तो आप

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय ।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय ॥

अर्थात्:-

बड़ी बड़ी किताबें पढ़कर संसार में कितने ही लोग मृत्यु के द्वार पहुंच गए, पर सभी विद्वान न हो सके। कबीर मानते हैं कि यदि कोई प्रेम या प्यार के केवल ढाई अक्षर ही अच्छी तरह पढ़ ले। अर्थात प्यार का वास्तविक रूप पहचान ले तो वही सच्चा ज्ञानी होगा।

- कबीर

Example

जब यशोदा जी ने श्री कृष्ण को अपने अहंकार से बांधना चाहा तो सभी रस्सियाँ छोटी पड़ गईं किंतु जब उन्होंने समर्पण भाव से प्यार की रस्सी में उनको बांधना चाहा तो श्री कृष्ण अपने आप ही बंध गए।



जैसे सारी नॉलेज का रिवाइज़ कोर्स कर रहे हो,
वैसे ही अपनी प्राप्ति व पुरुषार्थ का चार्ट भी शुरू से रिवाइज़ करके देखो।
उसमें मुख्य चार सब्जेक्ट्स हैं। चारों को सामने रखो और हर सब्जेक्ट्स में पास हो उसको देखो।
जैसे **चार सब्जेक्ट्स** हैं – ज्ञान, योग, दैवी गुणों की धारणा और ईश्वरीय सेवा।

वैसे ही यहाँ **चार सम्बन्ध** भी हैं,
तीन सम्बन्ध तो स्पष्ट हैं – सत् बाप, सत् शिक्षक और सद्गुरु परन्तु
चौथा सम्बन्ध है **साजन और सजनी का**।
यह भी एक **विशेष सम्बन्ध** है-आत्मा-परमात्मा का मिलन अर्थात् सगाई।
यह सम्बन्ध भी **पुरुषार्थ को सहज कर देता है**।

} m.m.m. Temp

जैसे चार सब्जेक्ट्स हैं, वैसे ही **चार सम्बन्ध सामने लाओ** और इन चार सम्बन्धों के आधार से मुख्य चार धारणायें हैं।

एक तो **बाप** के सम्बन्ध में-**'फरमान वरदार'**,
शिक्षक के सम्बन्ध में-**'इर्मानदार'** और
गुरु के सम्बन्ध में-**'आज्ञाकारी'** और
साजन के सम्बन्ध में-**'वफादार'**।

जो यह चारों सम्बन्ध और चार विशेष धारणायें इन सभी को रिवाइज़ करके देखो।

AV- 21/7/73

जिस समय वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है तो उस समय स्वयं को यह समझना चाहिए कि क्या मैंने सर्व-सम्बन्धों की सर्व-रसनायें बाप द्वारा प्राप्त नहीं की हैं? कोई रस रह गया है क्या कि जिस कारण दृष्टि और वृत्ति चंचल होती है? जिस सम्बन्ध से भी वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है उसी सम्बन्ध की रसना यदि बाप से लेने का अनुभव करो तो क्या दूसरी तरफ दृष्टि जायेगी? समझो **कोई मेल की, फीमेल की तरफ दृष्टि जाती है या फीमेल की, मेल की तरफ जाती है तो क्या बाप सर्व रूप धारण नहीं कर सकता?** साजन व सजनी के रूप में भी बाप से सजनी बन व साजन बन कर अतीन्द्रिय सुख का जो रस सदा-सदा काल स्मृति में और समर्थी में लाने वाला है, वह अनुभव नहीं कर सकते हो? बाप से सर्व- सम्बन्धों के रस व स्नेह का अनुभव न होने के कारण देहधारी में वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है। ऐसे समय में बाप को धर्मराज के रूप में सामने लाना चाहिए और स्वयं को एक रौरव नर्कवासी व विष्ठा का कीड़ा समझना चाहिए। और सामने देखो कि कहाँ मास्टर सर्वशक्तिमान् और कहाँ मैं, इस समय क्या बन गया हूँ? रौरव नर्कवासी विष्ठा का कीड़ा ऐसे स्वयं का रूप सामने लाओ और तुलना करो कि कल क्या था और अब क्या हूँ? तख्तनशीन से क्या बन गया हूँ? तख्त-ताज को छोड़ क्या ले रहा हूँ? गन्दगी। तो उस समय क्या बन गये? गन्दगी को देखने वाला व धारण करने वाला कौन हुआ? गन्दा काम करने वाले को क्या कहते हैं? बिल्कुल जिम्मेवार आत्मा से जमादार बन जाते हो। क्या ऐसे को बाप-दादा टच कर सकता है? स्नेह दृष्टि दे सकता है? अर्ज़ी मान सकता है? कम्प्लेन्ट व उलहना सुन सकता है? इतने नॉलेजफुल होने के बाद भी वृत्ति और दृष्टि चंचल हो, तो उसे भक्त आत्मा से भी गिरी हुई आत्मा कहेंगे। भक्त भी किसी युक्ति से अपनी वृत्ति को स्थिर करते हैं। तो मास्टर नॉलेजफुल भक्त आत्मा से भी नीचे गिर जाते हैं। तो क्या ऐसी आत्मा की कोई प्रजा बनेगी? जमादार की कोई प्रजा बनेगी क्या या वह स्वयं प्रजा बनेंगे?

AV- 11/07/74

In Short, बाबा को हम साजन तो बनाते ही है किंतु चु की वो भी आत्मा ही है तो सजनी भी बना सकते है....

क्योंकि आत्मा में विष्णु चतुर्भुज अर्थात male and Female दोनों के संस्कार विद्यमान है।

हमारे प्राणो से भी प्यारे शिवबाबा - की जिनके बिना हमारा कोई अस्तित्व ही नहीं हैं।
क्योंकि हम जब उनसे बिछुड़े तब से जैसे की शरीर से रूह निकल जाने के बाद जो
शरीर की हालत होती हैं, वैसी ही मुझ आत्मा की हालत थी।
किन्तु अब वो मिल गए हैं तो हम फिर से अपने को जिन्दा महसूस करते हैं।

और भी....

माया की अक्षोहिणी सेना के सामने हमारी अकेले की हैसियत एक चींटी जितनी भी
नहीं हैं और अगर प्यारे बाबा साथ/Combined हैं तो उस माया की हैसियत हमारे
सामने चींटी से भी पदम् गुना कम हो जाती हैं।

तो आज ये गीत समर्पित है उस प्राणों से प्यारे सच्चे साथी शिवबाबा को...

★■◆●★■◆●★■◆●

link of this song



तेरी साँसों की साँस में
जो हूँ तो मैं हूँ



(ओ मेरे प्राणप्यारे साथी...!

जैसे कोई भी मनुष्य को जिंदा रहने के लिए साँस लेना अनिवार्य है, अगर साँस नहीं तो जीवन
नहीं ..

वैसे ही आपकी साँस अर्थात सारे विश्व को संपन्न बनाने के आपके जो कल्याणकारी संकल्प
चलते हैं तो उन संकल्पों को पूरा करने के लिए आप जिस निमित्त को याद करते हो तो वो मैं
ही तो हूँ ।)

तेरे ख्वाबों की आंच में
जो हूँ तो मैं हूँ

(इस पतित श्रुष्टि को सम्पूर्ण पावन बनाने का जो आपका ख्वाब हैं - तो उस ख्वाब को पूरा
करने अर्थ आपका सर्व श्रेष्ठ instrument/ Right hand भी तो मैं ही हूँ।

In short, आप के संकल्प वा स्वप्न में भी मैं ही तो हूँ।)

तेरे होने से ही मेरा होना है
तुझको खोना जैसे खुदको खोना

(जैसे आप मेरे बिना नहीं रह सकते

वैसे ही आपके होने से ही तो मेरा भी होना/अस्तित्व हैं और मैं जब परमधाम से यहां पार्ट
बजाने आती हूँ अर्थात आप से दूर होती हूँ या आपको खो देती हूँ तो जैसे आपको नहीं परंतु
स्वयं को ही खो देती हूँ

क्युकी जैसे जिस्म और जान/आत्मा एक दूजे के बिना रह नहीं सकते वैसे ही मैं जिस्म हूँ और
आप मेरी जान/आत्मा।)

तू जो है तो मैं हूँ, यूँ जो है तो मैं हूँ X 2

(तो... अगर आप हो तो ही मेरा अस्तित्व हैं और

अगर यूँ ही/इस प्रकार ही हम दोनों combined हैं तो ही मैं अपने को जिन्दा पाता हूँ। अर्थात
तुम नहीं तो मैं भी नहीं।)

@@@@@@@@

बिन तेरे मेरा क्या है
जिसको सुनू जिसको कहूँ

(ओ मेरे प्राणों के प्राण,
मुझे आप जरा ये तो बताईये की
आप के बिना मेरा इस जहान में हैं ही क्या वा है ही कौन..?
जिसको मैं कुछ कहूँ या फिर जिस से मैं कुछ सुनु...)

बिन तेरे मुझ में क्या है
जिसको जियूँ जिस में रहूँ

(या फिर ये बताईये की
आप के बिना मुज मैं रिंचक मात्र भी ऐसा क्या हैं की जिसको मैं जीऊ या
फिर जिसमे मैं रहूँ...?)

तुझ में ही दुनिया मेरी है
तेरे एक पल में सदियाँ मेरी

(मेरे प्राणनाथ, मेरे साजन ...
आप में ही तो मेरी सारी दुनिया हैं अर्थात अभी ही साकार मनुष्य श्रुष्टि
मेरे लिए भस्म हुई पड़ी हैं।
और आप के साथ मैं अभी इस संगम पर जो एक पल भी बिताता हूँ तो
वो मुझे आपके साथ सदियाँ बिताने का अनुपम सुख प्रदान करता हैं और
उस ही सुख में मैं सदैव रहना चाहता हूँ।)

बिन तेरे मैं सहारा(सहारा के हिंदी अर्थ · मरुस्थल, रेगिस्तान, मरुभूमि, वो
जगह जहाँ पानी घास और पेड़ आदि कुछ भी न हो) सा हूँ

(तो आप जब मेरे साथ होते हो तो मैं आत्मा मधुबन सी खेल जाती हूँ
और
आप से बिछड़कर व आप के बिना मैं एक रेगिस्तान सी विरान बन जाती
हूँ।)

बिन तेरे मैं क़तरा भी नहीं

(अगर आप साथ हो तो मेरा अस्तित्व एक अनंत महासागर सा
शक्तिशाली हो जाता और
अगर आप मेरे साथ नहीं तो मेरा अस्तित्व एक पानी के बूँद जितना भी
नहीं।)

तेरे होने से ही मेरा होना है
तुझको खोना जैसे खुदको खोना
तू जो है तो मैं हूँ, यूँ जो है तो मैं हूँ X 2

@@@@@@@@@

तू मेरे चेहरे पे है
राहत सा जो ठहरा हुआ

(मेरे सिकीलधे बाबा,
आपको पाकर दिल में जो एक ही अनहद नाद निकल रहा है कि
"जो पाना था सो पा लिया"
उस कारण, मैं जिस स्थूल शरीर को ले कर पार्ट बजा रहा हूँ उस
शरीर के चेहरे पर बेफिक्र बादशाह सी राहत समान ठहरे हुए हों
आप।)

मैं भी तेरे हाथों में
किस्मत सा हूँ, बिखरा हुआ

(जैसे किस्मत की लकीरें हाथ से मिटाई नहीं जा सकती...
वैसे ही मैं भी तुम्हारे हाथों में किस्मत की लकीरों सा बिखरा हुआ
हूँ
अर्थात् माया, प्रकृति और सर्व आत्माएं इकठे होकर भी मुझे
आपसे और आपको मुझ से संकल्प मात्र भी जुदा नहीं कर
सके।)

तू मेरी रूह सा है
तुझको छू के मैं ज़िंदा लगूँ

(जैसे शरीर में अगर आत्मा न हो तो उस शरीर की कोई भी
value नहीं होती।
वैसे ही मैं शरीर हूँ और आप मेरी आत्मा...
तो मैं शरीर आप आत्मा से combined रह कर ही अपने को
जिन्दा महसूस करता हूँ।)

जब भी मैं मुझको देखूँ
मुझ में भी मैं तुझ सा लगूँ

(और इसीलिए तो...
जब भी मैं अपने को देखती हूँ तो 'विष्णु एवं शंकर-पार्वती के
चित्र मुआफ़िक' हम दोनों एक दूजे में समाये हुए होने के कारण,
जैसे आप हो वैसे ही मैं मुझको सर्व शक्तिओ/गुणों में आपके
समान सारे ब्रह्मांड का मालिक अभी से ही महसूस करता हूँ।)

तेरे होने से ही मेरा होना है
तुझको खोना जैसे खुदको खोना
तू जो है तो मैं हूँ, यूँ जो है तो मैं हूँ
तू जो है तो मैं हूँ, यूँ जो है तो मैं हूँ

slogan of
today -



Other movie songs to submerge
in the love of supreme



Click